Totalbhakti.com

!! श्री दुर्गा कवच !!

ऋषि मार्कंड़य ने पूछा जभी !

दया करके ब्रह्माजी बोले तभी !!

के जो गुप्त मंत्र है संसार में !

हैं सब शक्तियां जिसके अधिकार में !!

हर इक का कर सकता जो उपकार है !

जिसे जपने से बेडा ही पर है !!

पवित्र कवच दुर्गा बलशाली का !

जो हर काम पूरे करे सवाली का !!

सुनो मार्कंड़य मैं समझाता हूँ !

मैं नवदुर्गा के नाम बतलाता हूँ !!

कवच की मैं सुन्दर चोपाई बना !

जो अत्यंत हैं गुप्त देयुं बता !!

नव दुर्गा का कवच यह, पढे जो मन चित लाये !

उस पे किसी प्रकार का, कभी कष्ट न आये !!

कहो जय जय जय महारानी की !

जय दुर्गा अष्ट भवानी की !!

पहली शैलपुत्री कहलावे !

दूसरी ब्रह्मचरिणी मन भावे !!

तीसरी चंद्रघंटा शुभ नाम !

चौथी कुश्मांड़ा सुखधाम !!

www.totalbhakti.com

पांचवी देवी अस्कंद माता !

छटी कात्यायनी विख्याता !!

सातवी कालरात्रि महामाया !

आठवी महागौरी जग जाया !!

नौवी सिद्धिरात्रि जग जाने !

नव दुर्गा के नाम बखाने !!

महासंकट में बन में रण में !

रुप होई उपजे निज तन में !!

महाविपत्ति में व्योवहार में !

मान चाहे जो राज दरबार में !!

शक्ति कवच को सुने सुनाये !

मन कामना सिद्धी नर पाए !!

चामुंडा है प्रेत पर, वैष्णवी गरुड़ सवार !

बैल चढी महेश्वरी, हाथ लिए हथियार !!

कहो जय जय जय महारानी की !

जय दुर्गा अष्ट भवानी की !!

हंस सवारी वारही की !

मोर चढी दुर्गा कुमारी !!

लक्ष्मी देवी कमल असीना !

ब्रह्मी हंस चढी ले वीणा !!

ईश्वरी सदा बैल सवारी !

भक्तन की करती रखवारी !!

www.totalbhakti.com

शंख चक्र शक्ति त्रिशुला !

हल मूसल कर कमल के फ़ूला !!

दैत्य नाश करने के कारन !

रुप अनेक किन्हें धारण !!

बार बार मैं सीस नवाऊं !

जगदम्बे के गुण को गाऊँ !!

कष्ट निवारण बलशाली माँ !

दुष्ट संहारण महाकाली माँ !!

कोटी कोटी माता प्रणाम !

पूरण की जो मेरे काम !!

दया करो बलशालिनी, दास के कष्ट मिटाओ !

चमन की रक्षा को सदा, सिंह चढी माँ आओ !!

कहो जय जय जय महारानी की !

जय दुर्गा अष्ट भवानी की !!

अग्नि से अग्नि देवता !

पूरब दिशा में येंदरी !!

दक्षिण में वाराही मेरी !

नैविधी में खडग धारिणी !!

वायु से माँ मृग वाहिनी !

पश्चिम में देवी वारुणी !!

उत्तर में माँ कौमारी जी!

ईशान में शूल धारिणी !!

www.totalbhakti.com

ब्रहामानी माता अर्श पर !

माँ वैष्णवी इस फर्श पर !!

चामुंडा दसों दिशाओं में, हर कष्ट तुम मेरा हरो !

संसार में माता मेरी, रक्षा करो रक्षा करो !!

सन्मुख मेरे देवी जया !

पाछे हो माता विजैया !!

अजीता खड़ी बाएं मेरे !

अपराजिता दायें मेरे !!

नवज्योतिनी माँ शिवांगी !

माँ उमा देवी सिर की ही !!

मालाधारी ललाट की, और भ्रुकुटी कि यशर्वथिनी !

भ्रुकुटी के मध्य त्रेनेत्रायम् घंटा दोनो नासिका !!

काली कपोलों की कर्ण, मूलों की माता शंकरी !

नासिका में अंश अपना, माँ सुगंधा तुम धरो !!

संसार में माता मेरी, रक्षा करो रक्षा करो !!

ऊपर वाणी के होठों की !

माँ चन्द्रकी अमृत करी !!

जीभा की माता सरस्वती !

दांतों की कुमारी सती !!

इस कुंठ की माँ चंदिका !

और चित्रघंटा घंटी की !!

कामाक्षी माँ ढ़ोढ़ी की !

www.totalbhakti.com

माँ मंगला इस बनी की !!

ग्रीवा की भद्रकाली माँ !

रक्षा करे बलशाली माँ !!

दोनो भुजाओं की मेरे, रक्षा करे धनु धारनी !

दो हाथों के सब अंगों की, रक्षा करे जग तारनी !!

शुलेश्वरी, कुलेश्वरी, महादेवी शोक विनाशानी !

जंघा स्तनों और कन्धों की, रक्षा करे जग वासिनी !!

हृदय उदार और नाभि की, कटी भाग के सब अंग की !

गुम्हेश्वरी माँ पूतना, जग जननी श्यामा रंग की !!

घुटनों जन्घाओं की करे, रक्षा वो विंध्यवासिनी !

टकखनों व पावों की करे, रक्षा वो शिव कि दासनी !!

रक्त मांस और हड्डियों से, जो बना शारीर !

आतों और पित वात में, भरा अग्न और नीर !!

बल बुद्धि अंहकार और, प्राण ओ पाप समान !

सत रज तम के गुणों में, फँसी है यह जान !!

धार अनेकों रुप ही, रक्षा करियो आन !

तेरी कृपा से ही माँ, चमन का है कल्याण !!

आयु यश और कीर्ति धन, सम्पति परिवार !

ब्रह्मणी और लक्ष्मी, पार्वती जग तार !!

विद्या दे माँ सरस्वती, सब सुखों की मूल !

दुष्टों से रक्षा करो, हाथ लिए त्रिशूल !!

भैरवी मेरी भार्या की, रक्षा करो हमेश !

www.totalbhakti.com

मान राज दरबार में, देवें सदा नरेश !!

यात्रा में दुःख कोई न, मेरे सिर पर आये !

कवच तुम्हारा हर जगह, मेरी करे सहाए !!

है जग जननी कर दया, इतना दो वरदान !

लिखा तुम्हारा कवच यह, पढे जो निश्चय मान !!

मन वांछित फल पाए वो, मंगल मोड़ बसाए !

कवच तुम्हारा पढ़ते ही, नवनिधि घर आये !!

ब्रह्माजी बोले सुनो मार्कंड़य !

यह दुर्गा कवच मैंने तुमको सुनाया !!

रहा आज तक था गुप्त भेद सारा !

जगत की भलाई को मैंने बताया !!

सभी शक्तियां जग की करके एकत्रित !

है मिट्टी की देह को इसे जो पहनाया !!

चमन जिसने श्रद्धा से इसको पढ़ा जो !

सुना तो भी मुह माँगा वरदान पाया !!

जो संसार में अपने मंगल को चाहे !

तो हरदम कवच यही गाता चला जा !!

बियाबान जंगल दिशाओं दशों में !

तू शक्ति की जय जय मनाता चला जा !!

तू जल में तू थल में तू अग्नि पवन में !

कवच पहन कर मुस्कुराता चला जा !!

निडर हो विचर मन जहाँ तेरा चाहे !

www.totalbhakti.com

चमन पाव आगे बढ़ता चला जा !!

तेरा मान धन धान्य इससे बढेगा !

तू श्रद्धा से दुर्गा कवच को जो गए !!

यही मंत्र यन्त्र यही तंत्र तेरा !

यही तेरे सिर से हर संकट हटायें !!

यही भूत और प्रेत के भय का नाशक !

यही कवच श्रद्धा व भक्ति बढ़ाये !!

इसे निसदिन श्रद्धा से पढ़ कर !

जो चाहे तो मुह माँगा वरदान पाए !!

इस स्तुति के पथ से पहले कवच पढे !

कृपा से आधी भवानी की, बल और बुद्धि बढे !!

श्रद्धा से जपता रहे, जगदम्बे का नाम !

सुख भोगे संसार में, अंत मुक्ति सुखधाम !!

कृपा करो मातेश्वरी, बालक चमन नादाँ !

तेरे दर पर आ गिरा, करो मैया कल्याण !!

!! जय माता दी !!

www.totalbhakti.com